मैथिलीशरण गुप्त जी और उनका 'द्वापर' : भाव पक्ष एवं कलापक्ष का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ.विनीता रानी,
सहायक आचार्य,
विभाग–हिन्दी, संघटक राजकीय महाविद्यालय, पूरनपुर,पीलीभीत

शोध सारांश

'राष्ट्रकवि' मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक हिंदी कविता के द्विवेदीयुगीन नवजागरण के प्रमुख स्तंभ हैं। उन्होंने अपने काव्यों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, पौराणिक आख्यानों और ऐतिहासिक वृत्तांतों को आधुनिक युगीन चेतना के सांचे में ढालकर प्रस्तुत किया। सन् १९३६ में प्रकाशित उनका विशिष्ट प्रबंध काव्य 'द्वापर' महाभारत और कृष्ण–कथा के पात्रों का एक अभिनव मनोवैज्ञानिक और मानवीय विश्लेषण है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य श्द्वापरश के भावपक्ष (जीमउंजपबध्म्उवजपवदंस)चमबज) और कलापक्ष (।तजपेजपब)चमबज) का समग्र एवं सूक्ष्म मूल्यांकन करना है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि गुप्त जी ने किस प्रकार ईश्वरीय चमत्कारों के स्थान पर पात्रों के अंतर्द्वंद्व, विशेषकर नारी चेतना (विद्रुता, कुंती, द्रौपदी, राधा) और मानवीय संवेदनाओं को केंद्र में रखकर खड़ी बोली के परिष्कृत कलात्मक रूप का विकास किया।

बीज शब्द : *खड़ी बोली, नवजागरण, प्रबंध काव्य, द्वापर, भाव पक्ष, कलापक्ष, युगीन चेतना, नारी विमर्श ।*

प्रस्तावना (Introduction)

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में द्विवेदी युग का महत्त्व एक नवजागरण (Renaissance) के रूप में है, जिसने कविता को रीतिकाल की श्रृंगारिक दलदल से निकालकर राष्ट्रीयता, नैतिकता और मानवतावाद के ठोस धरातल पर खड़ा किया। इस युग के सर्वोत्कृष्ट प्रतिनिधि कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। गुप्त जी ने रामकथा (साकेत), बौद्ध दर्शन (यशोधरा) और महाभारत कथा (द्वापर, जयद्रथ वध) जैसे पौराणिक और ऐतिहासिक प्रसंगों को अपने काव्य का विषय बनाया।

'द्वापर' (१९३६) गुप्त जी की एक अत्यंत प्रौढ़ और प्रयोगधर्मी रचना है। परंपरा से हटकर, यह काव्य किसी एक नायक की क्रमिक कथा नहीं कहता, बल्कि यह द्वापर युग (महाभारत और कृष्ण-अवतार के काल) के सोलह प्रमुख पात्रों के 'एकालापों' (Monologues) का संग्रह है। इसमें कृष्ण, राधा, कुंती, द्रौपदी, बलराम, उद्धव, अक्रूर, कंस और विद्रुता जैसे पात्र अपने-अपने दृष्टिकोण से युगीन सत्य, धर्म, समाज और ईश्वर की व्याख्या करते हैं।

'द्वापर' का अध्ययन इसलिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि यहाँ कृष्ण केवल एक लीलाधारी भगवान नहीं हैं, बल्कि वे एक मानवीय आदर्श, एक लोकनायक और एक सुधारक के रूप में उभरते हैं। इसी प्रकार, इस काव्य का भावपक्ष मानवीय अंतर्द्वंद्वों, सामाजिक विषमताओं और युगीन प्रश्नों से बुना गया है, जबकि इसका कलापक्ष खड़ी बोली हिंदी की प्रांजलता, गेयता और नाटकीयता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

शोध का उद्देश्य (Objectives of the Study)

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है:

1. 'द्वापर' काव्य की पृष्ठभूमि और उसकी संरचनात्मक नवीनता (चरित्र-प्रधान एकालाप शैली) का विश्लेषण करना।
2. काव्य के भावपक्ष का गहन अध्ययन करना, जिसमें पौराणिक पात्रों का मानवीकरण, उनके मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व और युगीन सामाजिक चेतना (विशेषकर नारी विमर्श) को रेखांकित करना।
3. काव्य के कलापक्ष का मूल्यांकन करना, जिसके अंतर्गत भाषा-शैली (खड़ी बोली का प्रयोग), रस, छंद, अलंकार और नाटकीयता की समीक्षा की जाएगी।
4. यह स्थापित करना कि 'द्वापर' किस प्रकार अपने समय (स्वाधीनता आंदोलन और गांधीवादी युग) की वैचारिक अनुगूँज को पौराणिक आवरण में प्रस्तुत करता है।

शोध प्रविधि (Research Methodology)

इस शोध कार्य हेतु मुख्यतः 'विश्लेषणात्मक' (Analytical), 'मनोवैज्ञानिक' (Psychological) और 'आलोचनात्मक' (Critical) अध्ययन प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। मैथिलीशरण गुप्त रचित मूलपाठ ('द्वापर') का सूक्ष्म पाठ-विश्लेषण (Textual Analysis) किया गया है। साथ ही, पात्रों के मनोभावों को समझने के लिए आधुनिक मनोविज्ञान और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण का सहारा लिया गया है। विषय की प्रामाणिकता हेतु विभिन्न प्रतिष्ठित आलोचकों (जैसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ. नगेंद्र आदि) के मतों का भी संदर्भ लिया गया है।

'द्वापर': पृष्ठभूमि और काव्य-स्वरूप

'द्वापर' का मूल्यांकन करने से पूर्व इसके स्वरूप और रचना-प्रक्रिया को समझना अनिवार्य है। महाकाव्य और खंडकाव्य की पारंपरिक परिभाषाओं से अलग, 'द्वापर' एक विशिष्ट प्रकार का 'चरित्र-प्रधान काव्य' है।

संरचनात्मक नवीनता: कथा नहीं, दृष्टिकोण

गुप्त जी के 'साकेत' में एक क्रमिक कथा का निर्वाह है, परंतु 'द्वापर' में कोई धारावाहिक कथा-सूत्र नहीं है। गुप्त जी ने महाभारत और भागवत पुराण की कथा को पाठकों के लिए पूर्व-परिचित मान लिया है। उन्होंने घटनाओं का वर्णन करने के बजाय घटनाओं के प्रति पात्रों की 'प्रतिक्रिया' और उनके 'मनोवैज्ञानिक विश्लेषण' पर ध्यान केंद्रित किया है। काव्य में कुल सोलह पात्र हैं, और प्रत्येक पात्र अपने नाम के शीर्षक के अंतर्गत अपनी पीड़ा, अपने तर्क और अपने दर्शन को एक एकालाप (Soliloquy/Monologue) के रूप में प्रस्तुत करता है। यह शैली अंग्रेजी साहित्य के रॉबर्ट ब्राउनिंग (Robert Browning) के 'ड्रामैटिक मोनोलॉग' से बहुत मिलती-जुलती है।

युगीन चेतना का आरोपण

यद्यपि कथा द्वापर युग की है, किंतु इसमें धड़कन बीसवीं सदी के भारत की है। १९३६ का समय भारत में गांधीवादी राष्ट्रीय आंदोलन, समाजसुधार, दलितोद्धार और नारी-मुक्ति के संघर्ष का दौर था। गुप्त जी ने इन सभी आधुनिक विचारों को 'द्वापर' के पात्रों के माध्यम से स्वर दिया है।

- इसमें सामंतवाद का विरोध है।
- रूढ़िवादी कर्मकांडों पर प्रहार है।
- नारी की स्वतंत्रता और उसकी गरिमा का उद्घोष है।

यही कारण है कि 'द्वापर' का भावपक्ष केवल भक्ति या स्तुति का पक्ष न होकर, एक बौद्धिक और सामाजिक क्रांति का पक्ष बन जाता है।

'द्वापर' का भाव पक्ष: मिथक का आधुनिकीकरण

भावपक्ष किसी भी काव्य की आत्मा होता है। यह कवि की संवेदना, उसके विचार और उसके जीवन-दर्शन का प्रतिनिधित्व करता है। 'द्वापर' के भावपक्ष की सबसे बड़ी विशेषता इसका 'मानवतावाद'

(Humanism) और पौराणिक मिथकों का 'आधुनिकीकरण' है।

ईश्वरीय चमत्कार के स्थान पर मानवीय कर्म की प्रतिष्ठा

भक्तिकाल में सूरदास या मीराबाई के यहाँ कृष्ण सर्वशक्तिमान ईश्वर हैं, जिनकी हर लीला चमत्कारी है। परंतु आधुनिक काल के कवि मैथिलीशरण गुप्त के कृष्ण एक महामानव हैं। गुप्त जी ने ईश्वरीय रहस्यवाद का आवरण हटाकर कृष्ण को एक ऐसे लोकनायक के रूप में प्रस्तुत किया है, जो अपने कर्म और बुद्धि से समाज का उद्धार करते हैं। कृष्ण स्वयं अपने एकालाप में ईश्वरीय चमत्कारों से इनकार करते हुए 'कर्म' और 'कर्तव्य' की महत्ता स्थापित करते हैं। यहाँ कृष्ण गांधीवादी दर्शन के बहुत निकट दिखाई देते हैं, जहाँ सेवा, कर्मयोग और निष्काम कर्म ही वास्तविक धर्म है।

मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व का चित्रण

'द्वापर' के पात्र सीधे तौर पर अच्छे या बुरे (Black and White) नहीं हैं; वे मानवीय दुर्बलताओं और अंतर्द्वंद्वों से भरे हुए हैं। गुप्त जी ने पात्रों के मन के भीतर चल रहे तूफानों को बड़ी सूक्ष्मता से पकड़ा है। उदाहरण के लिए, 'कंस' का चरित्र। पुराणों में कंस केवल एक क्रूर राक्षस है, लेकिन 'द्वापर' का कंस एक भयभीत, असुरक्षित और मानसिक रूप से विक्षिप्त तानाशाह है। उसे हर क्षण मृत्यु का भय सताता है। उसका यह मनोविज्ञान आधुनिक सत्ताधीशों के मनोविज्ञान से मेल खाता है, जो अपनी सत्ता खोने के डर से निरंकुश हो जाते हैं। इसी प्रकार, 'उद्धव' ज्ञान और वैराग्य के प्रतीक हैं, लेकिन गोपियों के सहज प्रेम के सामने उनका शुष्क ज्ञान कैसे टूटता है, इसका अत्यंत मनोवैज्ञानिक चित्रण काव्य में हुआ है। यह भावपक्ष की वह गहराई है जो पात्रों को पुराण के पन्नों से निकालकर हमारे सामने खड़ा कर देती है।

'द्वापर' में नारी विमर्श: मौन और मुखरता का द्वंद्व

मैथिलीशरण गुप्त के संपूर्ण साहित्य की एक अत्यंत विशिष्ट पहचान यह है कि उन्होंने सदैव उपेक्षित, शोषित और हाशिएकृत नारी पात्रों को केंद्र में रखकर उनके प्रति गहरी संवेदना व्यक्त किया है। 'साकेत' में उर्मिला और 'यशोधरा' में गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा की पीड़ा को स्वर देने के बाद, 'द्वापर' में गुप्त जी ने नारी विमर्श (Feminist Discourse) को एक नई, अधिक प्रखर और विद्रोही ऊँचाई प्रदान की है।

'द्वापर' की नारी पात्र केवल रोने या विलाप करने वाली अबलाएं नहीं हैं, बल्कि वे अपने अधिकारों के प्रति सचेत, तार्किक और तत्कालीन पितृसत्तात्मक व्यवस्था से सीधे प्रश्न करने वाली आधुनिक चेतना संपन्न स्त्रियाँ हैं।

विद्रुता : विद्रोह और बौद्धिक चेतना का प्रतीक

'द्वापर' का सबसे सशक्त, मौलिक और क्रांतिकारी पात्र 'विद्रुता' है। विद्रुता एक ब्राह्मण की पत्नी है, जिसका पति दिन-रात खोखले कर्मकांडों और यज्ञों में लिप्त रहता है, लेकिन उसके हृदय में न प्रेम है और न ही ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति। विद्रुता उस रूढ़िवादी, पुरुष-वर्चस्ववादी और कर्मकांडीय व्यवस्था के खिलाफ एक प्रखर विद्रोह का प्रतीक है। वह अपने पति के अंधविश्वास और स्त्री को केवल एक 'वस्तु' या 'सहधर्मिणी' के रूप में देखने की संकीर्ण मानसिकता पर करारा प्रहार करती है। वह समाज की उस दोहरी नीति को उजागर करती है जहाँ स्त्री को देवी कहा जाता है, किंतु वास्तव में उसे दासी से अधिक कुछ नहीं समझा जाता। ये पंक्तियाँ बीसवीं सदी के नारीवादी विमर्श की सबसे तीखी घोषणाओं में से एक हैं। विद्रुता यह स्वीकार करने से इंकार कर देती है कि स्त्री का अस्तित्व केवल पुरुष की काम-वासना की तृप्ति या उसके यज्ञों में साथ बैठने तक सीमित है। वह पुरुष के बौद्धिक और आध्यात्मिक एकाधिकार को चुनौती देते हुए अपनी स्वतंत्र वैचारिक सत्ता की मांग करती है। विद्रुता का एकालाप हिंदी साहित्य में स्त्री के आत्म-सम्मान और वैचारिक स्वतंत्रता का एक ऐतिहासिक घोषणापत्र है।

कुंती : मातृत्व का मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व और पीड़ा

कुंती का एकालाप मातृत्व, सामाजिक लांछन और एक स्त्री के भीतर छिपे गहरे मनोवैज्ञानिक अपराधबोध (Psychological Guilt) का अद्वितीय चित्रण है। महाभारत की कुंती पाँच पांडवों की सम्मानित माता है, लेकिन 'द्वापर' की कुंती वह स्त्री है जो जीवन भर अपने पहले पुत्र 'कर्ण' को त्यागने की पीड़ा और ग्लानि से जलती रही है। गुप्त जी ने समाज के उस क्रूर चेहरे को सामने रखा है जो एक अविवाहित माता को स्वीकार नहीं करता और जिसके भय से कुंती जैसी राजकन्या को भी अपने नवजात शिशु को नदी में प्रवाहित करना पड़ता है। कुंती का यह कथन समाज की पितृसत्तात्मक नैतिकता पर एक बड़ा प्रश्नचिह्न लगाता है। यहाँ कुंती का विलाप केवल एक माँ का रोना नहीं है, बल्कि यह उस सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध एक मूक चीत्कार है जो पुरुष के स्खलन को तो अनदेखा कर देती है, किंतु स्त्री के जीवन को एक भूल के लिए आजीवन नर्क बना देती है।

द्रौपदी : न्याय की पुकार और क्षत्राणी का आक्रोश

द्रौपदी भारतीय मिथक में अपमानित और शोषित स्त्री का सबसे बड़ा रूपक है। 'द्वापर' में द्रौपदी का एकालाप उस समय का है जब वह भरी सभा में अपने चीरहरण के बाद अपमान की अग्नि में जल रही है। यहाँ द्रौपदी किसी ईश्वरीय चमत्कार का इंतज़ार करने वाली असहाय स्त्री नहीं है, बल्कि वह धर्मराज युधिष्ठिर के तथाकथित 'धर्म' और खोखले आदर्शवाद पर सीधा प्रहार करने वाली क्षत्राणी है। वह युधिष्ठिर की उस जुए की लत और उस मानसिकता को कटघरे में खड़ी करती है, जिसने उसे (द्रौपदी को) एक 'संपत्ति' समझकर दांव पर लगा दिया। द्रौपदी का यह कथन स्त्री को संपत्ति मानने वाली सामंती मानसिकता का घोर विरोध है। वह युधिष्ठिर की निष्क्रियता और भीष्म-द्रोण जैसे शूरवीरों की कायरतापूर्ण चुप्पी को धिक्कारती है। यहाँ गुप्त जी ने द्रौपदी के माध्यम से तत्कालीन भारतीय समाज (स्वाधीनता आंदोलन के दौर) को भी यह संदेश दिया है कि जहाँ नारी का सम्मान नहीं, वहाँ बड़े-बड़े धर्म और शास्त्र व्यर्थ हैं।

राधा : प्रेम का उदात्तीकरण और लोक-कल्याण

रीतिकाल में राधा को केवल एक विरहिणी नायिका और श्रृंगार की वस्तु बना दिया गया था। गुप्त जी ने 'द्वापर' में राधा के चरित्र को उस सामंती और रीतिकालीन संकीर्णता से मुक्त कर उसे एक अत्यंत उदात्त...उसे एक अत्यंत उदात्त) रूप प्रदान किया है। 'द्वापर' की राधा कृष्ण के वियोग में केवल आंसू नहीं बहाती, बल्कि वह अपने वैयक्तिक प्रेम (Personal Love) को समष्टिगत प्रेम (Universal Love) में बदल देती है। वह समझती है कि कृष्ण केवल उसके नहीं हैं, वे संपूर्ण विश्व के तारणहार हैं। राधा अपने प्रेम का 'उदात्तीकरण' करते हुए लोक-कल्याण के मार्ग को अपनाती है। यहाँ राधा का प्रेम, त्याग और विश्व-बंधुत्व की भावना से ओतप्रोत है। वह आधुनिक युग की ऐसी साधिका प्रतीत होती है जो व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज की सेवा को ही ईश्वर की सच्ची भक्ति मानती है।

सामाजिक यथार्थ, युगबोध और गांधीवादी चेतना

यद्यपि 'द्वापर' की कथा पौराणिक है, किंतु उसका 'भावपक्ष' पूरी तरह से आधुनिक और युगीन है। मैथिलीशरण गुप्त अपने समय के प्रति अत्यंत सजग रचनाकार थे। १९३०-३६ का दशक भारतीय इतिहास में गांधीजी के नेतृत्व में लड़े जा रहे स्वाधीनता संग्राम, अछूतोद्धार (दलित विमर्श की शुरुआत), और सामाजिक सुधारों का दशक था। 'द्वापर' के पात्र इन्हीं गांधीवादी आदर्शों के प्रवक्ता बनकर सामने आते हैं।

कर्मकांडों और बाह्याडंबरों का विरोध

विद्रुता और अक्रूर जैसे पात्रों के माध्यम से गुप्त जी ने समाज में फैले अंधविश्वास, यज्ञों में पशुबलि, और पुरोहित वर्ग के पाखंड पर कठोर प्रहार किया है। विद्रुता का पति जब केवल स्वर्ग प्राप्ति के स्वार्थ से यज्ञ करता है और उसमें निर्दोष पशुओं की बलि देता है,

तो विद्रुता उसका विरोध करते हुए सच्ची भक्ति की परिभाषा गढ़ती है। गुप्त जी का संदेश स्पष्ट है कि ईश्वर आडंबरों से नहीं, बल्कि सच्ची करुणा और मानव-प्रेम से प्रसन्न होता है। यह सीधे तौर पर आर्य समाज और गांधीजी के समाज सुधार आंदोलनों की अनुगूँज है।

समतावाद और जाति-पांति का खंडन

कृष्ण का मथुरा गमन और वहाँ कंस के अत्याचारी शासन का अंत केवल एक राजनीतिक घटना नहीं है, बल्कि यह शोषित वर्ग के उत्थान का प्रतीक है। कृष्ण स्वयं को ग्वालों (समाज के सामान्य और श्रमिक वर्ग) का प्रतिनिधि मानते हैं। वे इंद्र की पूजा (जो एक सत्ताधारी और अभिजात्य देवता का प्रतीक है) का विरोध कर गोवर्धन पूजा (जो प्रकृति और श्रम का प्रतीक है) आरंभ करवाते हैं। यह तत्कालीन समाज में सामंतवाद और ब्राह्मणवादी वर्चस्व के खिलाफ एक वैचारिक क्रांति थी।

राजनीतिक चेतना: कंस का मनोविज्ञान और सत्ता का चरित्र

'द्वापर' के भावपक्ष की एक और बड़ी उपलब्धि सत्ता के मनोविज्ञान (Psychology of Power) का यथार्थवादी चित्रण है। कंस का एकालाप किसी राक्षस की हुंकार नहीं है, बल्कि वह एक तानाशाह के भीतर छिपे भय (Paranoia) का सजीव दस्तावेज़ है। गुप्त जी ने दर्शाया है कि जो शासक प्रजा पर अत्याचार करता है, वह भीतर से सबसे अधिक डरा हुआ होता है। कंस के भीतर हर पल अपनी मृत्यु का, अपनी सत्ता छिन जाने का भय व्याप्त है। वह आकाशवाणी (भविष्य के सत्य) से इतना डरा हुआ है कि वह नवजात शिशुओं की हत्या करने लगता है। कंस का यह मनोवैज्ञानिक चित्रण बीसवीं सदी के उन साम्राज्यवादियों (जैसे ब्रिटिश सत्ता या फासीवादी तानाशाहों) का सटीक रूपक है, जो विद्रोह की किसी भी आवाज़ को बर्बरता से कुचल देना चाहते थे। कंस के एकालाप में राजनीतिक पतन और सत्ता की क्षणभंगुरता का अत्यंत मार्मिक और यथार्थवादी चित्र उकेरा गया है।

छंद-विधान और नाद-सौंदर्य

मैथिलीशरण गुप्त को हिंदी कविता में 'मात्रिक छंदों का सम्राट' कहा जाता है। उन्होंने खड़ी बोली की प्रकृति के अनुकूल ऐसे छंदों का निर्माण और प्रयोग किया, जो उसमें संगीतात्मकता और नाद-सौंदर्य भर सकें। 'द्वापर' का छंद-विधान इसकी नाटकीय एकालाप शैली के कारण उनके अन्य काव्यों (जैसे साकेत या पंचवटी) से थोड़ा भिन्न और अधिक प्रयोगधर्मी है।

मात्रिक छंदों का स्वच्छंद प्रयोग

गुप्त जी का अत्यंत प्रिय छंद 'हरिगीतिका' रहा है, किंतु 'द्वापर' में चूँकि पात्रों के भीतर का मानसिक द्वंद्व और आक्रोश व्यक्त होना था, इसलिए उन्होंने छंदों को किसी एक कठोर शास्त्रीय नियम में नहीं बांधा। इसमें प्रवाहमयी और लचीली मात्रिक छंद-योजना का प्रयोग हुआ है, जो पात्रों के संवादों की गति के अनुसार घटती-बढ़ती रहती है। पंक्तियों में तुकांतता (Rhyme) का निर्वाह तो किया गया है, लेकिन कहीं-कहीं वह अतुकांत जैसी स्वच्छंदता का आभास भी देती है। इससे कविता में गद्य जैसी स्वाभाविकता और पद्य जैसी गेयता का अद्भुत मिश्रण उत्पन्न हुआ है।

यति-गति और संवाद की लय

'द्वापर' के छंदों में यति (विराम) और गति (प्रवाह) का अत्यंत मनोवैज्ञानिक उपयोग किया गया है। जब पात्र क्रोध या क्षोभ में होता है (जैसे विद्रुता या द्रौपदी), तो छोटे-छोटे वाक्यों और त्वरित गति वाले छंदों का प्रयोग होता है। जब पात्र दार्शनिक चिंतन में होता है (जैसे कृष्ण या उद्धव), तो छंद की गति मंथर और गंभीर हो जाती है। विस्मयादिबोधक और प्रश्नवाचक चिह्नों के साथ वाक्यों का समापन छंदों को एक ऐसी

नाटकीय लय (Dramatic Rhythm) प्रदान करता है जो सीधे रंगमंच के संवादों जैसी प्रतीत होती है।

यति-गति और संवाद की लय (Rhythm of Dialogue) (क्रमशः) (विस्मयादिबोधक और प्रश्नवाचक चिह्नों के साथ वाक्यों का समापन) छंदों को एक ऐसी नाटकीय लय (Dramatic Rhythm) प्रदान करता है जो सीधे रंगमंच के संवादों जैसी प्रतीत होती है।

अलंकार-योजना : सहजता और अर्थ-गांभीर्य (Figure of Speech: Naturalness and Depth of Meaning) द्विवेदी युग तक आते-आते रीतिकाल की वह चमत्कारिक और बोझिल अलंकार-योजना समाप्त हो गई थी, जिसमें कवि केवल अपनी विद्वता दिखाने के लिए अलंकारों को ठूँसते थे। गुप्त जी के काव्य में अलंकार सायास (जानबूझकर) नहीं आए हैं, बल्कि वे भावों के उत्कर्ष में सहायक बनकर अत्यंत सहज रूप में उपस्थित हुए हैं।

शब्दालंकार

भाषा में संगीत और लय उत्पन्न करने के लिए गुप्त जी ने अनुप्रास, यमक और पुनरुक्ति प्रकाश का सुंदर प्रयोग किया है। एक ही वर्ण की आवृत्ति (अनुप्रास) से वे जो ध्वनि-चित्र खींचते हैं, वह अत्यंत श्रुतिमधुर है। वियोग और पीड़ा को दर्शाने के लिए पुनरुक्ति प्रकाश (एक ही शब्द का दो बार आना) का प्रयोग पात्रों की मानसिक बेचैनी को उभारता है।

अर्थालंकार

'द्वापर' के कलापक्ष की सबसे बड़ी शक्ति इसके अर्थालंकार हैं। दार्शनिक विचारों, जटिल मानसिक अवस्थाओं और पौराणिक संदर्भों को स्पष्ट करने के लिए गुप्त जी ने उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा और दृष्टांत अलंकारों की झड़ी लगा दी है।

रूपक : कृष्ण और गोपियों के प्रसंगों में, तथा उद्धव के ज्ञान-गर्व को तोड़ने के लिए रूपक का अत्यंत सशक्त प्रयोग हुआ है। ज्ञान को 'शुष्क मरुस्थल' और प्रेम को 'रस की नदी' के रूप में चित्रित किया गया है।

दृष्टांत : अपनी बात को तर्क की कसौटी पर कसने के लिए (विशेषकर विद्वता और द्रौपदी के प्रसंगों में) दृष्टांत अलंकार का प्रयोग किया गया है। सामाजिक विषमताओं को स्पष्ट करने के लिए दैनिक जीवन और प्रकृति से सीधे उदाहरण उठाए गए हैं।

प्रकृति चित्रण (Depiction of Nature)

भारतीय काव्यशास्त्र में प्रकृति को सदैव एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त रहा है। 'द्वापर' में प्रकृति केवल एक निष्क्रिय पृष्ठभूमि (Backdrop) नहीं है, बल्कि वह पात्रों की मानसिक अवस्था का आईना (Mirror) और उनके भावों को उद्दीप्त करने वाली एक सक्रिय शक्ति है।

आलंबन और उद्दीपन रूप

'द्वापर' में प्रकृति के दोनों रूपों—आलंबन (स्वतंत्र चित्रण) और उद्दीपन (भावों को तीव्र करने वाला)—का चित्रण मिलता है। गोपियों और राधा के एकालाप में, यमुना का तट, कदंब के वृक्ष, वंशी की ध्वनि और वर्षा ऋतु के बादल वियोग श्रृंगार को उद्दीप्त करने (Uddipan) का कार्य करते हैं। मथुरा की कठोरता के बरक्स गोकुल की प्रकृति का कोमल और उन्मुक्त चित्रण, वास्तव में सत्ता के अहंकार और ग्रामीण जीवन की सरलता का ही द्वंद्व है।

प्रकृति का मानवीकरण (Personification of Nature)

छायावाद के समानांतर लिखते हुए गुप्त जी ने भी प्रकृति का मानवीकरण किया है। राधा के प्रसंग में, जब वह अपनी विरह-वेदना में डूबती है, तो उसे संपूर्ण प्रकृति अपने ही जैसी विरहिणी और सहानुभूतिपूर्ण प्रतीत होती है। प्रकृति और मानव के बीच की यह रागात्मक अनुभूति (Emotional connection) 'द्वापर'

के कलापक्ष को अत्यंत कोमल और मार्मिक बना देती है।

बिंब और प्रतीक विधान (Imagery and Symbolism)

आधुनिक कविता में बिंब (Image) और प्रतीक (Symbol) बहुत महत्वपूर्ण उपकरण माने जाते हैं। गुप्त जी ने 'द्वापर' में पौराणिक कथाओं के आवरण में आधुनिक युग के अत्यंत सटीक और मनोवैज्ञानिक बिंब गढ़े हैं।

चाक्षुष और श्रव्य बिंब (Visual and Auditory Imagery) : कंस के एकालाप में मृत्यु के भय और असुरक्षा के जो दृश्य उकेरे गए हैं, वे अत्यंत सजीव चाक्षुष बिंब (Visual Imagery) प्रस्तुत करते हैं। कंस को हर परछाई में, हर कोने में अपना काल (कृष्ण) खड़ा दिखाई देता है। यह एक तानाशाह के विक्षिप्त मन का सटीक चित्र है। इसी प्रकार, गोकुल के प्रसंगों में वंशी की तान, गायों के रंभाने और यमुना की लहरों का जो वर्णन है, वह सशक्त श्रव्य बिंब (Auditory Imagery) का निर्माण करता है।

पात्रों का प्रतीकात्मक स्वरूप (Symbolic Nature of Characters) : 'द्वापर' का प्रत्येक पात्र किसी न किसी विशिष्ट विचारधारा या युगीन समस्या का प्रतीक (Symbol) है:

- **कृष्ण:** वे केवल ईश्वर नहीं, बल्कि 'निष्काम कर्मयोग', 'लोक-संग्रह' और 'सामाजिक क्रांति' के प्रतीक हैं।
- **राधा:** वे 'उदात्त विश्व-प्रेम' और 'समष्टिगत करुणा' की प्रतीक हैं।
- **विद्रुता और द्रौपदी:** ये दोनों नारी की 'बौद्धिक चेतना', 'अधिकारों की मांग' और 'पुरुष-सत्ता के विरुद्ध विद्रोह' की प्रतीक हैं।
- **कंस:** यह 'निरंकुश सत्ता', 'साम्राज्यवाद' और 'तानाशाही के पतन' का प्रतीक है।
- **उद्धव:** ये 'शुष्क बौद्धिकता' और 'पुस्तकीय ज्ञान' के प्रतीक हैं, जो अंततः प्रेम और लोक-अनुभव के सामने नतमस्तक हो जाते हैं।

इस प्रकार, 'द्वापर' का बिंब और प्रतीक विधान इसे एक पौराणिक आख्यान से उठाकर बीसवीं सदी के भारतीय जनमानस का मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दस्तावेज़ बना देता है।

समकालीन विमर्श और 'द्वापर' की प्रासंगिकता (Contemporary Discourse and Relevance of 'Dwapar')

रचनाकाल के लगभग नौ दशक बाद भी मैथिलीशरण गुप्त का 'द्वापर' केवल एक ऐतिहासिक या पौराणिक गाथा बनकर नहीं रह गया है, बल्कि यह आज के समकालीन विमर्शों के परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक है। गुप्त जी ने जिस 'समन्वयवादी दृष्टि' (Syncretic Vision) का परिचय इस प्रबंध काव्य में दिया है, वह इसे कालजयी (Classic) बनाता है।

आधुनिक नारी विमर्श के प्रस्थान बिंदु के रूप में

आज का नारीवादी विमर्श (Feminist Discourse) स्त्री की देह से आगे बढ़कर उसके बौद्धिक, सामाजिक और आर्थिक अधिकारों की बात करता है। 'द्वापर' में विद्रुता और द्रौपदी के एकालाप इस आधुनिक विमर्श की पूर्वपीठिका तैयार करते हैं। विद्रुता द्वारा पुरुष के एकाधिकार को दी गई चुनौती और स्त्री को केवल 'वस्तु' या 'अनुगामिनी' समझने की मानसिकता पर उसका प्रहार आज के समाज के लिए भी एक बड़ा सबक है। गुप्त जी ने यह सिद्ध किया कि स्त्री की अस्मिता उसके स्वयं के विवेक और तर्क में निहित है, किसी पुरुष की छाया में नहीं।

सत्ता, धर्म और समाज का यथार्थवादी विश्लेषण

आज के वैश्विक परिदृश्य में जहाँ धर्म का राजनीतिकरण हो रहा है और सत्ताएँ निरंकुश (Autocratic) होती जा रही हैं, वहाँ 'द्वापर' के पात्र हमें चेतावनी देते हैं। कंस का मनोविज्ञान आज के किसी भी तानाशाह के भीतर बैठे उस डर और असुरक्षा का सटीक वर्णन है, जो विरोध की हर आवाज़ को कुचल देना चाहता है। विदुरता और अक्रूर के तर्क आज भी हमें यह समझाते हैं कि धर्म का वास्तविक अर्थ कर्मकांडों में उलझना या पशु-बलि देना नहीं है, बल्कि 'मानव-सेवा' और 'सत्य का आचरण' है। कृष्ण का यह संदेश कि "मनुष्यत्व ही मेरा ईश्वर है," आज के धार्मिक कट्टरवाद का सबसे बड़ा वैचारिक उपचार है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विस्तृत अध्ययन एवं समीक्षात्मक विश्लेषण के आधार पर यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि 'द्वापर' राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की काव्य-प्रतिभा का एक अत्यंत प्रौढ़, परिष्कृत और प्रयोगधर्मी शिखर है।

१. भाव पक्ष की श्रेष्ठता: 'द्वापर' का भाव पक्ष कोरी भावुकता या अंधभक्ति का परिचायक नहीं है। इसमें पौराणिक मिथकों का बौद्धिक मानवीकरण (Intellectual Humanization) किया गया है। गुप्त जी ने कृष्ण को ईश्वरीय रहस्यवाद से निकालकर एक युग-प्रवर्तक महामानव के रूप में प्रतिष्ठित किया है। इसमें व्यक्त नारी चेतना (विदुरता, कुंती, द्रौपदी, राधा), सामाजिक न्याय की पुकार और मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व (कंस, उद्धव) इसे द्विवेदी युग के नीतिवादी घेरे से बाहर निकालकर एक आधुनिक मनोवैज्ञानिक काव्य का दर्जा देते हैं।

२. कलापक्ष का अभिनव प्रयोग: शिल्प की दृष्टि से 'द्वापर' हिंदी साहित्य में एक अनूठा प्रयोग है। इसकी 'प्रबंध-मुक्तक' संरचना और 'एकालाप शैली' (Dramatic Monologue) ने हिंदी कविता को वर्णन-प्रधान (Descriptive) होने से बचाकर आत्मकथ्यात्मक और नाटकीय (Dramatic) बना दिया। यह शैली पाठकों को पात्रों की आत्मा के सबसे अंधेरे और सबसे उजले कोनों में झांकने का अवसर देती है।

३. खड़ी बोली का परिष्कार: इस काव्य में खड़ी बोली अपनी पूरी सामर्थ्य, लोच और प्रांजलता के साथ उपस्थित हुई है। गुप्त जी ने तत्सम शब्दावली की गंभीरता और तद्भव शब्दों की मिठास का ऐसा मणिकांचन संयोग प्रस्तुत किया है कि भाषा विचारों का बोझ उठाने के साथ-साथ संगीतमय भी बनी रही है।

अंततः, 'द्वापर' परंपरा और आधुनिकता का एक सेतु है। मैथिलीशरण गुप्त ने अतीत के गौरव गान के बहाने वर्तमान की विसंगतियों पर प्रहार किया है। 'द्वापर' केवल महाभारत काल के पात्रों की व्यथा-कथा नहीं है, बल्कि यह बीसवीं सदी के भारत की राजनीतिक आकुलता, सामाजिक सुधार की छटपटाहट और नारी-मुक्ति के शंखनाद का अत्यंत सशक्त काव्यात्मक दस्तावेज़ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References/Bibliography)

- मूल पाठ: गुप्त, मैथिलीशरण (१९३६). *द्वापर.* साकेत प्रकाशन, चिरगाँव, झाँसी।
- शुक्ल, आचार्य रामचंद्र. *हिंदी साहित्य का इतिहास.* नागरी प्रचारिणी सभा, काशी। (द्विवेदी युगीन काव्य-प्रवृत्तियों के संदर्भ हेतु)।
- नगेंद्र, डॉ. (संपा.). *हिंदी साहित्य का इतिहास.* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- अवस्थी, डॉ. उमाकांत. *मैथिलीशरण गुप्त: काव्य और चिंतन.* (गुप्त जी के काव्यों के

मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक विश्लेषण के लिए)।

- शर्मा, डॉ. रामविलास. *महावीरप्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण.* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली। (नवजागरण काल में खड़ी बोली और सामाजिक चेतना के विकास के संदर्भ में)।
- सिंह, डॉ. नामवर. *आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ.* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
- गुप्त, कमलाकांत (संपा.). *मैथिलीशरण गुप्त: व्यक्ति और काव्य.* (विभिन्न आलोचकों के निबंधों और 'द्वापर' की एकालाप शैली के शिल्पगत मूल्यांकन हेतु)।